बनाम जन

अपनी बनाई राह पर

मृणाल पांडे

स्त्री-चिंतन और राजनीतिक अभिव्यक्ति

मृणाल पाण्डे का स्त्री-चिंतन विमर्श-मूलक स्त्री-अस्मिता बोध से भिन्न है। गैर-बराबरी की स्थितियों को पितृसत्ता के खिलाफ संघर्ष के रूप में घटित करने की बजाय उनके यहाँ स्त्री की पहचान, उसके विस्तृत सामाजिक फलक पर हुई है। उनकी दृष्टि ऐसी तमाम सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थितियों पर है जिसमें ऐसी संरचनाएँ पनपती हैं जिनका व्यवहार स्त्री के प्रति भेदभावपूर्ण होता है और उसके साथ-साथ उन्होंने पारंपरिक समाज व लोक-जीवन में स्त्रियों के साहस और जिजीविषा की भी पहचान की है। इंदु जैन की कविता की एक पंक्ति है--'मैं डरी जरूर, लेकिन मरी नहीं'।[1] मृणाल पाण्डे के यहाँ भी प्रतिकूल परिस्थितियों में स्त्रियों ने जिस जीवट का प्रमाण दिया है, उसके आख्यान आश्वस्त करते हैं। उनकी चिंता और सवाल व्यवस्था की दृष्टि से अधिक हैं। लोकतांत्रिक शासन, प्रशासन और संस्थाओं ने स्त्री शिक्षा या स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी अधिकारों को लेकर अपेक्षित भूमिका नहीं निभाई जिससे स्त्रियों का संघर्ष और भी कठिन होता गया। मृणाल पाण्डे का स्त्री-चिंतन इस सारे इतिवृत्त को समेटकर उसे आधी आबादी के अधिकार का राजनीतिक प्रश्न बनाता है। उनकी विचारपरक स्त्री केन्द्रित पुस्तकों के शीर्षक इसी सत्य के संकेतक हैं--'स्त्री, देह की राजनीति से देश की राजनीति तक' (1987), 'परिधि पर स्त्री' (1996), 'ओ उब्बीरी!' (2003), 'बंद गलियों के विरुद्ध' (2004), 'जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं' (2006), 'स्त्री : लम्बा सफर' (2015), 'ध्वनियों के आलोक में स्त्री' (2015)। इन रचनाओं पर आगे चर्चा करेंगे लेकिन इनके माध्यम से यह स्पष्ट है कि मृणाल जी के स्त्री-चिंतन को स्त्री मुद्दों तक सीमित नहीं किया जा सकता, (जैसा कि स्त्री-विचारकों के साथ प्रायः किया जाता है) वह अपने आप में एक बहुत बड़ा 'पॉलिटिकल स्टेटमेंट' हैं। आजाद हिंदुस्तान में बड़ी होती पीढ़ियों ने अपने सामाजिक-राजनीतिक जीवन से कई स्तरों पर संवाद किया। मृणाल पाण्डे का चिंतन, स्त्री के संबंध में हो या राजनीति के स्तर पर भारत की 'बहुलता' को स्वीकार करने वाली उदार ज्ञान-चेतना पर आधारित है। इस दृष्टि बोध से, बतौर नागरिक जब हम अपने लोकतंत्र को देखते हैं तब एक तीव्र आलोचनात्मक, प्रश्नाकुल नजरिया भी पैदा होता है जो हमारे सामाजिक व्यवहार को निर्देशित करता है। इस दृष्टिकोण के कारण ही मृणाल जी ने पत्रकारिता का क्षेत्र चुना। स्वतंत्रचेता, सजग नागरिक और स्वावलंबी स्त्री के लिए पत्रकारिता का संकल्प नई दिशाओं का संघर्ष है।

मृणाल जी की रचनाधर्मिता उनकी बहुविज्ञता से पोषित है। स्त्री, उनकी बहुत-सी रचनाओं के केंद्र में है। कथा-साहित्य में भी और विचार प्रधान कथेतर गद्य में भी लेकिन उनका कोई भी लेखन इकहरा नहीं। समाजशास्त्र से लेकर दर्शन और साहित्य की गहरी समझ उसे परत-दर-परत लिपटे अनुभव की संश्लिष्टता प्रदान करती है। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कथाकार शिवानी की सुपुत्री होने के नाते कथा-संरचना का संस्कार उन्हें विरासत में मिला। साहित्य रचना के साथ ही वे दिल्ली विश्वविद्यालय के एक प्रतिष्ठित कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य के प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहीं। इस पृष्ठभूमि ने उन्हें भाषिक प्रयोग के प्रति सचेत बनाया। रोजमर्रा की भाषा तथा साहित्य की भाषा के अंतर और सामंजस्य को उनके यहाँ लक्षित किया जा सकता है। एक समर्थ साहित्यकार के रूप में वे भाषा की नई संभावनाएँ उजागर करती हैं। उनके द्वारा किए गए विलक्षण प्रयोग साहित्य रचना को सौन्दर्यशास्त्रीय अनुभव के रूप में पहचानने

रेखा सेठी : सुपरिचित आलोचक। अनेक पुस्तकें। दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन।
2 ए, जमुना रोड, प्रथम तल, सिविल लाइंस, दिल्ली - 110054
फोन : 9810985759 ईमेल : reksethi22@gmail.com

RSethi

में मदद करते हैं। कथा साहित्य हो, कथेतर साहित्य या पत्रकारिता के विभिन्न पड़ाव अपने लेखन व जीवन में अनेक ऐसे निर्णय लिए जो लीक से हटकर हैं। प्राध्यापकीय जीवन की सुरक्षा छोड़कर पूर्णकालिक पत्रकार होने का फैसला, ऐसा ही चुनाव है। कथेतर साहित्य तथा पत्रकारिता के अंतर्गत सामाजिक विषयों पर उनका लेखन गंभीर शोध से प्राप्त दृष्टि और तर्क पर आधारित है।

भूमंडलीकृत बाजार और समाज में आज का मध्यवर्ग अपनी भाषिक अस्मिता के प्रति पहले की अपेक्षा अधिक विश्वस्त महसूस कर रहा है। इस स्थिति के प्रत्यावर्तन में जिन पत्रकारों का अक्षुण्ण योगदान है मृणाल पाण्डे उनमें से एक हैं। उनके पत्रकार जीवन की शुरुआत 'समाचार भारती' नामक समाचार एजेंसी से हुई थी, उसके बाद उन्होंने 'टाइम्स ऑफ इंडिया' समूह की 'वामा' पत्रिका की कमान संभाली। यह एक स्त्री केंद्रित पत्रिका थी। प्रायः ऐसी पत्रिकाओं में गॉसिप कॉलमों की बहुतायत रहती है लेकिन मृणाल जी ने इससे बचते हुए स्वस्थ पत्रिका निकालने की कोशिश की (लेकिन संभवतः व्यावसायिक कारणों से यह पत्रिका जल्द ही बंद भी हो गई।) मृणाल जी ने एक लंबे समय तक राष्ट्रीय स्वनियोजित महिला आयोग में रहते हुए कामगार स्त्रियों पर शोध किया। उनकी पुस्तक 'ओ उब्बीरी!' इसी अध्ययन से प्रेरित है। 1997-2001 के बीच उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में समाचार संपादक का काम संभाला। स्टार न्यूज तथा दूरदर्शन में उन्होंने केवल समाचार प्रस्तुत ही नहीं किए संपादन का दायित्व भी लिया। उसके बाद, कुछ वर्ष दैनिक 'हिंदुस्तान' की प्रधान संपादक रहीं और फिर 2010 में प्रसार भारती की अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया। इन दिनों 'नेशनल हेरल्ड' समूह की वरिष्ठ संपादकीय सलाहकार हैं।

मृणाल जी के कार्यक्षेत्र को समझने के लिए यह सारी भूमिका इसलिए आवश्यक है कि इसके माध्यम से हम देख पाते हैं कि कैसे पत्रकारिता के क्षेत्र में, जो मुख्यतः पुरुष वर्चस्व का ही क्षेत्र रहा है या कम से कम संपादकीय दायित्व महिलाओं को कम ही मिले हैं। ऐसे समय में मृणाल जी का एक राष्ट्रीय दैनिक का प्रधान संपादक होना खास मायने रखता है। अलग-अलग शहरों से निकलने वाले राष्ट्रीय दैनिक का संपादकीय दायित्व यह भी सिद्ध करता है कि ऐसी भूमिकाएँ व्यक्ति के जेन्डर से निर्दिष्ट नहीं हैं। बालमुकुंद गुप्त ने लिखा है, ''संपादक की दृष्टि गिद्ध की सी होनी चाहिए।''[2] यानी उसकी नजर पैनी और केंद्रित होनी चाहिए। मृणाल जी ने इस दृष्टि से संपादक की गरिमा को निभाया और इसके साथ-साथ एक स्त्री की नजर से स्त्री से जुड़े मुद्दों, समस्याओं को भी केंद्र में लाने का काम किया। स्त्री हो या पुरुष दोनों साझे यथार्थ के भागीदार होते हैं लेकिन स्त्रियों की दृष्टि से जब उसी यथार्थ को देखा जाता है तो देखने का लेंस बदल जाता है और कुछ ऐसी सचाइयाँ उजागर होने लगती हैं जिनकी ओर पहले ध्यान नहीं दिया गया। मृणाल पाण्डे भी जब संसद में महिला आरक्षण, राजनीति में महिला नेताओं का योगदान, स्त्रियों की शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़े सवालों पर टिप्पणी करती हैं तो यह अंतर रेखांकित किया जा सकता है। वे अधिकांशतः आंशिक सत्य या तथ्यों को लेकर विचार नहीं करतीं, उनका दृष्टिबोध एक विस्तृत पटल को केंद्र में लाता है। जैसे स्त्री की स्थिति पर विचार करते हुए उनके लिए यदि उसकी शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रश्न महत्त्वपूर्ण हैं तो वह लोकतान्त्रिक राजनीतिक व्यवस्था का ढाँचा भी विचार के केंद्र में है जिसमें महिला आरक्षण के सवाल बार-बार ओझल कर दिए जाते हैं और उस पर कोई एक दल नहीं सारे राजनीतिक दलों की मौन सहमति बन जाती है। गंभीर राजनीतिक विश्लेषक के नाते वे तत्कालीन घटनाओं के सहारे इन मुद्दों को चर्चा में लाने की कोशिश करती रहती हैं :

गैर आरक्षित (सवर्णबहुल) तबके के लिये 10 प्रतिशत आरक्षण के नवीनतम शोशे पर तमाम दलों के पुरुषों (तथा चंद महिलाओं) के बीच एक विस्मयकारी एकता के दर्शन हुए। सब जानते हैं कि चुनाव के ठीक पहले बिना नोटिस, बिना बहुदलीय विमर्श के असंवैधानिक होते हुए भी यह ब्रह्मास्त्र किस लिये

चलाया गया। पर चुनाव करीब हैं और खुद को आरक्षण का विरोधी कह कर कोई दल अपयश का भागी नहीं बनना चाहता। लेकिन महिलाओं को उनकी कुल संख्या के अनुपात से भी कम महज 33 प्रतिशत आरक्षण दिलवाने को एक विधेयक जो चौथाई सदी से लटका हुआ है, उस पर सांसद बाहर भले बहुत सकारात्मक रुख दिखाते हों सदन के भीतर उसे एक मूक सहमति से टाल जाते हैं। देश की 50 प्रतिशत महिला आबादी के लिये 33 प्रतिशत आरक्षण के इस वेताल को राजनीति के पीपल से उतार कर लाने का साहस छप्पनइंची छातीवाले प्रधानमंत्री जी तक ने नहीं किया। क्यों भाई? जब महिला सशक्तीकरण पर लगातार गोष्ठियाँ होती हैं तब तो शब्दों के धनी प्रधानमंत्री लगातार माताओं बहिनों के सशक्तीकरण के लिये अपनी सरकार के वादों इरादों की बाबत इतने कसीदे पढ़ते रहते हैं। पर इस बार जब आरक्षण की परिधि बढाने का समय आया तो राजा दुष्यंत की तरह उनको खुद अपने वादे याद नहीं रहे, यह क्या परम अचंभे का विषय नहीं?''[3]

इस अंश की भाषा पर भी गौर करना चाहिए। अनामिका अक्सर जिस स्त्री-भाषा की बात करती हैं, 'विट और ह्यूमर' को उसके प्रमुख उपकरण के रूप में देखती हैं। मृणाल जी भी इस 'विट' को कहीं छोड़ती नहीं। इसी विट के सहारे कड़ी और तीखी बात कहने से उन्हें कभी परहेज नहीं हुआ। दूसरे, इस पूरी स्थिति के विश्लेषण में कोई भी राजनीतिक दल बरी नहीं होता। ऐसे गुप-चुप समझौते हमारी उस मानसिकता को बेनकाब करते हैं जिसके बीच लिंगाधारित विषम सत्ता संतुलन को बनाए रखने के पीछे कई तरह के एजेंडे काम कर रहे हैं। भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक बनावट में स्त्री को देवी स्वरूप माना गया। स्त्री 'देवी' है और 'शक्ति' स्वरूपा भी यानी वह स्वयं शक्ति का स्रोत है। समय-समय पर, विशेष रूप से युद्ध/संघर्ष के समय देवताओं/योद्धाओं द्वारा शक्ति और सुरक्षा के लिए देवी का आह्वान किया गया, ऐसे अनेक प्रसंग हमारे परंपरागत मिथकों का हिस्सा हैं। स्त्री की इस सांस्कृतिक निर्मिति के रूपक पर मृणाल जी का ध्यान जाता है, इसीलिए जब वे भारत की सक्रिय राजनीति में स्त्री नेताओं के अंतर्गत उन स्त्रियों का विश्लेषण करती हैं जो प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री के रूप में सत्ता के शीर्ष पर रहीं तो उनका विश्लेषण अपने समकालीन पुरुष संपादकों की अपेक्षा अधिक संतुलित व उदार है। इंदिरा गांधी का तो रौब-रुतबा अलग था लेकिन जयललिता, मायावती और ममता बैनर्जी को मीडिया की तथाकथित मुख्यधारा में बहुत बार वह सम्मान नहीं दिया गया जिसकी वे हकदार हैं। बहुत बार तो उनको नीचा दिखाने के लिए अशोभनीय बातें भी लिखीं गईं हैं। मृणाल पाण्डे के लेख 'भारतीय राजनीति में देवी महात्म्य' से एक लंबा उद्धरण देने का लोभ संवरण नहीं कर पा रही :

''स्त्रियाः समस्ताः सकला जगत्सु तव देवि भेदाः (सारे संसार की स्त्रियाँ देवी के ही विभिन्न स्वरूपाकार हैं) मानने वाले देश में हर अंधकार युग में, सत्ता हथिया कर निरंकुश दानव बन बैठे सत्ताधारियों के दमनचक्र से मुक्ति पाने को हमारी आम जनता ने सार्थक प्रमाणित स्त्री शक्ति के आगे हमेशा, त्राहि माँ की गुहार लगाई है। और आजादी के बाद की सदी की ही तरह इस सदी में भी भितरघात, दमनकारिता या फिर क्षेत्रीय दलों के खुले वंशवाद और भ्रष्टाचार से कुपित आम जनता ने लगातार जुझारू महिला नेताओं को अपने वोटों से नवाजा है। जब सब नाकाम हो जायें तब स्त्री शक्ति ही नेपथ्य से प्रकट हो रुद्र के धनुष पर प्रत्यंचा चढायेगी, यह भरोसा आज भी बंगाल से तमिलनाडु तक कायम है।

इंदिरा गांधी की ही तरह माया, ममता और जयललिता का राजनीतिक कैरियर भी लंबा और हंगामी जीत, प्रवादों और वनवास के अंतरालों से भरा है। और इन सभी ने वनवास के दौरान पुरुष पोषित चुनावी राजनीति की अंतरंग जानकारी और निजी अनुभवों की खराद पर अपने और अपने दल के लिये चुनाव दर चुनाव कामयाब रणनीतियाँ रच ली हैं। दमनकारी दल को चुनौती देते ही (पुरुष समाज के आजमूदा नुस्खे की तहत) इन सभी महिलाओं का सिलसिलेवार तरीके से प्रतिस्पर्धियों की

सुरक्षित रखा जिसे वे कहती हैं, 'मेरा संगीत सिर्फ मेरे लिए है।' स्त्री के संसार की यह भी विशेषता है कि 'निज' और निजेत्तर के बीच चौड़ी खाइयाँ नहीं होतीं। इसीलिए संगीत में गहरी अभिरुचि उन्हें 'ध्वनियों के आलोक में स्त्री' जैसी पुस्तक के लिए प्रेरित करती है जहाँ जुझारू, नामवर स्त्री संगीतकार हैं तो लोकगीतों की छब भी है। स्त्री के गीत उसके अनुभव का इतिहास हैं जिन्हें दुनिया ने सुनकर भी अनसुना किया। ये लोकगीत सदियों से नानी-दादी की मार्फत लड़कियों को मिले हैं, जिन्हें उसने कभी संगत में गाया, कभी अनुकरण में दोहराया। बहुत बाद ही उनकी सच्चाई उसके जीवन में उजागर हुई और वह जान पाई कि उसके जीवन का नितांत निजी अनुभव स्त्री-जीवन के व्यापक जनक्षेत्र से जुड़ा है। यह औरत के जीवन का वह साझा इतिहास है जिसमें वह भोक्ता भी है और साक्षी भी। वह इन कहानियों की किरदार भी है और कहानीकार भी। इस पुस्तक के आलेख ऐसी ही संगीतकार स्त्रियों की कहानियों की मार्फत स्त्री के स्व को पहचानने और समाज से उसके रिश्ते को समझने की कोशिश की है। स्त्री का संगीत, बन्दिशों के बीच बसा मौन है।

स्त्रियों की रचनाओं में भावना के घनत्व को लक्षित कर एक पितृसत्तात्मक विचार पोषित होता है जिसमें बौद्धिकता पुरुषों के खाते है और भावना तथा संवेदना स्त्रियों के। मृणाल पाण्डे ने अपने लेखन व चिंतन में इस स्टीरियोटाइप को तोड़ा है। उनके लेखन में स्त्रियोचित संवेदनशीलता भी है और प्रखर बौद्धिकता भी। उन्होंने तमाम वर्जनाओं और अंतर्विरोध भरे जीवन के बीच स्त्री द्वारा अपने स्वत्त्व की पहचान और अपने होने और जीने के साधिकार प्रयत्न को तरजीह दी है। मुझे राष्ट्रीय आंदोलन के दिनों से बाद तक दोहराये जाने वाले गीत की पंक्ति रह-रहकर याद आती है---'हम भारत की नारी हैं फूल नहीं चिंगारी हैं'। इसी भावना से ओत-प्रोत स्त्रियों ने अपने विडंबनापूर्ण जीवन के बावजूद अपने साहस से समझौता नहीं किया। मृणाल जी के विश्लेषण में भी स्त्री कहीं दया की पात्र नहीं। वह अपनी लौ से जगमगाती है और जीवन के बीचों-बीच इन स्त्रियों ने जैसा बहनापा विकसित किया, बचे रहने की जो युक्तियाँ अपनाईं उनसे सिद्ध है कि स्त्री-शक्ति की इस ताकत को कोई मिटा नहीं सकता। विचार, व्याख्या, विश्लेषण तथा तर्कशीलता मृणाल पाण्डे के लेखन व चिंतन को संपूर्णता प्रदान करते हैं।

संदर्भ

1. इंदु जैन (2009), 'असंतुलन का सम', रेखा, सेठी तथा रेखा, उप्रेती (सं), हवा की मोहताज क्यों रहूँ (पृ 114) नयी दिल्ली : हार्पर हिन्दी, हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया
2. बालमुकुंद गुप्त (2009), 'मेले का ऊँट', रेखा, सेठी (सं), निबंधों की दुनिया : बालमुकुंद गुप्त (पृ 62) नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन
3. मृणाल पाण्डे (2019), 'आरक्षणः महिलाओं की अनदेखी की वही भारतीय आदत!' बीबीसी हिंदी https://www.bbc.com/hindi/india-46811493 (10 अगस्त 2021 को देखा गया)
4. मृणाल पाण्डे (2011), 'भारतीय राजनीति में देवी महात्म्य'*
5. मृणाल पाण्डे (2002), स्त्री : देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
6. मृणाल पाण्डे (2017), राह से भटके विश्वविद्यालय https://www.shikshabhartinetwork.com/viewBlog.php?postId=148 (10 अगस्त 2021 को देखा गया)
7. मृणाल पाण्डे, 'कंदील बलोच की हत्या'*

* दोनों लेख मृणाल जी से प्राप्त हुए।